बाघ चालीसा भाग-2

मूल्य @ ₹ 4/-

सरिस्का बाघ संरक्षण फाउण्डेशन
बाघ परियोजना, (शासी निकाय)
सरिस्का-301 022 जिला-अलवर

Staple

बाघ चालीसा भाग-2

बुद्धि-परीक्षण पुस्तिका

समय : 40 मिनट | पूर्णांक : 40 | प्राप्तांक : ______

नाम विद्यार्थी : ______________________________

पता : ______________________________

कक्षा : ______________ वर्ग : ______________ रोल नं. : ______

स्कूल का नाम : ______________________________

उम्र : ______________ जन्म दिनांक : ______________

नाम परीक्षक : ______________ परीक्षा की दिनांक : ______

पुस्तिका में बाघ संरक्षण-संवर्द्धन महत्ता दर्शाते 40 दोहों में रिक्त स्थानों को इसी पुस्तिका के अन्य पृष्ठों पर मुद्रित दोहों में से देखकर भरें एवं प्राप्तांकों के आधार पर अपना आंकलन स्वयं करें। एक सही उत्तर का एक अंक है।

निर्धारित समय में –

31 से 40 अंक पाने वाले	प्रखर बुद्धिमान
21 से 30 अंक पाने वाले	बुद्धिमान
11 से 20 अंक पाने वाले	संतोषप्रद
01 से 10 अंक पाने वाले	सामान्य

फोटो चिपकाने हेतु स्थान

नोट – दोहों को क्रम से पढ़ें एवं साथ वाले खाली बॉक्स में सही (✓) का निशान लगाने से आपको दुबारा देखना नहीं पड़ेगा।

...सुरक्षा के लिए, आओ हिन्दुस्तान। मिलजुल कर रक्षा करें, बनें नहीं अनजान।।

बाघ है जंगल के भूषण, दूर भगाते ये प्रदूषण।
बाघ बढ़ेंगे जैसे-जैसे, खुशहाली हो वैसे-वैसे।
बाघ वनों के हैं शृंगार, कुदरत के हैं ये उपहार।
बाघ देश के है आधार, आएँ करें बाघ से प्यार।
बाघ अगर खाएँगे चोट, मानवता में होगी खोट।
बाघ सदा देते वरदान, बाघ बिना जंगल वीरान।
बाघ बढ़ाते हैं उल्लास, इसमें है जीवन का वास।
बाघ धरा उर्वरा बनाते, सभी प्रदूषण दूर भगाते।
बाघ देखकर जो हरषाए, माँ दुर्गा की कृपा पाए।
बाघ सदैव मंगलकारी, इनकी सुरक्षा सुखकारी।
बाघ बचाकर हरसाएँगे, बाघ सताकर पछताएँगे।
बाघ वनों में हों भरपूर, फिर देखें जंगल का नूर।
बाघ बढ़े तो बढ़ते जंगल, जंगल में करते मंगल।
बाघ बचाना कार्य महान्, रक्षक होते देव समान।
बाघ बचाएँ शपथ उठाएँ, संहारक को दूर भगाएँ।

बाघ बचाएँ हे मनुज !, ये पृथ्वी के मूल। मानस में भर दिव्यता, करते भव निःशूल।।

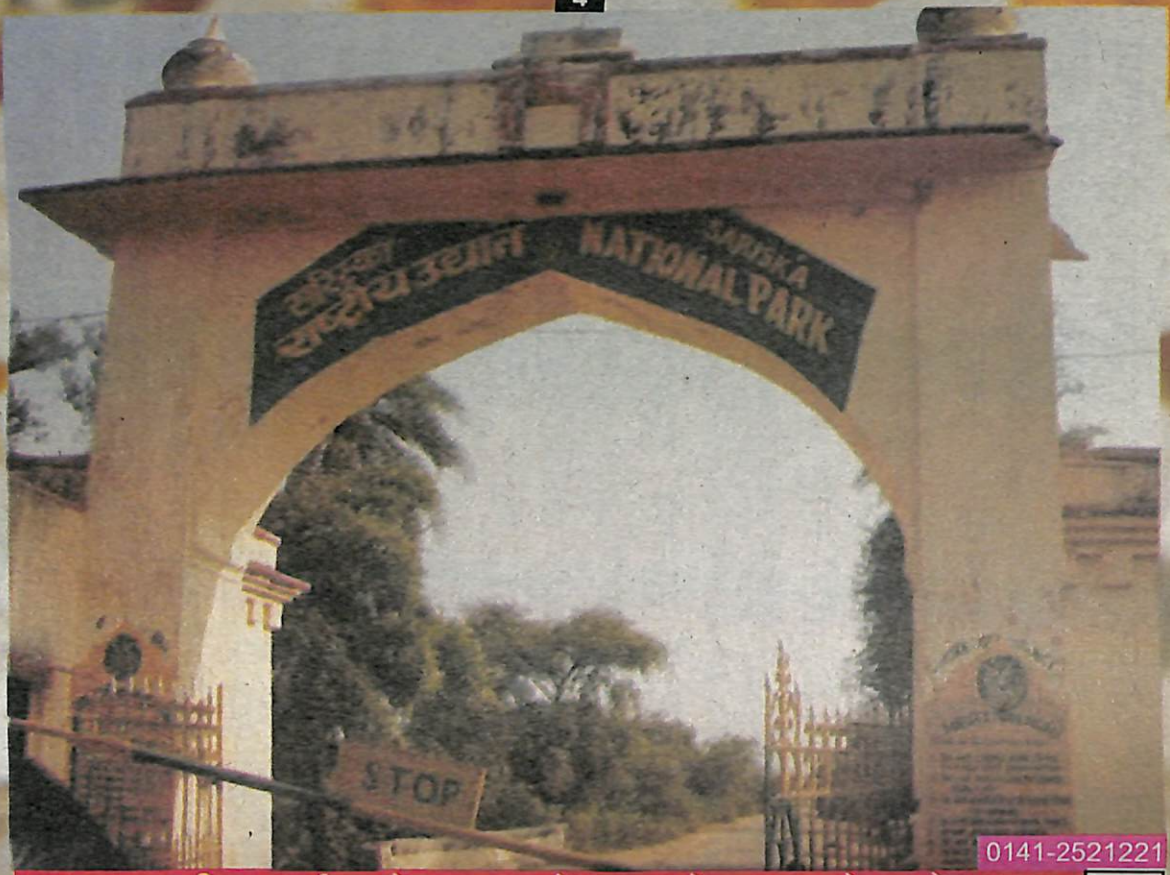

0141-2521221

बाघ धरा पर ही सदा ईश्वर के वरदान। मोल समझते बाघ का वे नर श्रेष्ठ महान।।

बाघ बचाने से मिले, जंगल को विस्तार।
जो मानव राखें इन्हें, मिलता उनको प्यार।।

बाघ-वंश पर करें न वार, सूना होगा यह संसार।

बाघ वनों के हैं रखवारे, वन हैं साँसों के रखवारे।

बाघ मारना भारी पाप, वध करने से लगता श्राप।

बाघ बचे हैं कुछ ही शेष, इनकी रक्षा करें विशेष।

बाघ की महत्ता पहचानें, धर्म-धरोहर है यह मानें।

बाघ सताना भारी भूल, ये जीवन के है प्रतिकूल।

बाघ वनों का बड़ा सहारा, सुधरे पर्यावरण हमारा।

बाघ दुखी कर रहे पुकार, रोकें हम पर अत्याचार।

बाघ बचाना ध्येय महान्, सुखी रहे इससे इन्सान।

बाघ हम आज बचाएँगे, कल को सुखमय बनाएँगे।

बाघ प्रदूषण के हैं भक्षक, सदा पर्यावरण संरक्षक।

बाघ वंश की करें सुरक्षा, वन की होगी तभी रक्षा।

बाघ जगत् में है अनमोल, रक्खें हिए तराजू तोल।

बाघ का होता मान जहाँ, सुखी रहते इन्सान वहाँ।

बाघ को हम देंगे जीवन, जिससे बने जग संजीवन।

बाघ वनों में लावे लाली, वरना जंगल रहते खाली।
बाघ हमें देते हरियाली, हरियाली लाती खुशहाली।
बाघ सदा है मंगलकारी, इनका रक्षण है सुखकारी।
बाघ नहीं धरती पर भार, ये करते हम पर उपकार।
बाघ बहुत होते उपयोगी, परहित के ये सच्चे योगी।
बाघ सदा मानव के मित्र, इस पर रक्खें दृष्टि पवित्र।
बाघ वनों के हैं आधार, करें बाघ की सार सम्भाल।
बाघ हम सदैव बचाएँगे, जन-जन को ये समझाएँगे।
बाघ को अगर हम मारेंगे, फिर खुद को कैसे तारेंगे।
बाघ सदैव गुणों की खान, खूब बढ़ाते हैं धन-धान।
बाघ का हम रक्षण करेंगे, जीवनभर खुशहाल रहेंगे।
बाघ बचा, पाएँ खुशहाली, जंगल में लाएँ हरियाली।
बाघ का जिस देश में मान, वही देश करते उत्थान।
बाघ बचाएँ हर नर-नार, पर्यावरण का स्वतः सुधार।
बाघ-प्रेम जिनके मन भाया, देखें धूप न देखें छाया।

बाघ प्रकृति के मूल हैं, मानव जीवन सार।
बाघ नहीं तो समझ लें, जीना है दुश्वार।।

0141-2521705

बाघ बचाते हम रहें, ये ईश्वर के रूप।
प्रजा पालने में कुशल, जगत् पिता सम भूप।।

बाघ हृदय की कोर हैं,
मानें ..... अभिन्न।
हित करे ये जंगल का,
कैसे मानें भिन्न।।

बाघ बचें तो हो सके,
..... भू-शृंगार।
आओ हम मिलकर करें,
इसके लिए विचार।।

बाघ का संरक्षण कर,
हो सबका उत्कर्ष।
इस ..... संसार में,
फिर खुशियाँ अरु हर्ष।।

बाघ त्याग कैसे करें,
..... मिथ्याचार।
बिना बाघ के किस तरह,
मानव करे विचार।।

बाघ है तो जंगल है,
..... से संसार।
बाघ बिना जग-जीव का,
सम्भव नहीं विचार।।

बाघ सृष्टि में रात-दिन,
करते ..... उपकार।
कष्ट झेलकर भी सदा,
वन के पालनहार।।

बाघ-सुरक्षा हो शुरू,
घर-आँगन-चौपाल।
गाँव-नगर फैलाइए,
..... वनों के जाल।।

बाघ मीत सम जानिए,
दें अन्तस ..... नेह।
तनिक प्रेम कर देखिए,
ये ममता के गेह।।

बाघ–सुरक्षा से मिले,
सुख–साधन भरपूर।
सरल हृदय से हो यही,
सेवा का दस्तूर।।

09460142430

बाघ को नहीं मारिए, त्यागें हाथ कृपाण। हत्या से कब हुआ है, मानव का कल्याण।।

बाघ सृष्टि में रात-दिन,
करते हैं उपकार।
कष्ट झेलकर भी सदा,
वन के पालनहार।।

बाघ सुरक्षा हाथ से,
..... का संयोग।
पूर्व जन्म के पुण्य का,
प्रकट होय जब योग।।

बाघ पूज्य हैं तात सम,
समझें ..... मर्म।
यही मोक्ष के द्वार हैं,
और सनातन धर्म।।

बाघ हमारी जान हैं,
जीवन ..... मुस्कान।
बाघ बिना जीवन नहीं,
ये जीवों की जान।।

बाघ बचाएँ जो मनुज,
पावे ..... प्रत्यक्ष।
उनके पुण्य प्रताप का,
कभी न सूखे वृक्ष।।

बाघ त्याग कैसे करे, होगा मिथ्याचार। बिना बाघ के किस तरह, मानव करे विचार।।

बाघ जहाँ घटते तभी, ... रेगिस्तान। बसना उस स्थान पर, कभी नहीं आसान।।	बाघ ..... देवता, करते जन-कल्याण। स्वार्थ हीन प्रतिदान के, ममतापूर्ण प्रमाण।।
बाघ बचाना अधिकतम, है जीवन ..... सार। इनसे ही अच्छा लगे, यह सारा संसार।।	बाघ को नहीं मारिए, त्यागें ..... कृपाण। हत्या से कब हुआ है, मानव का कल्याण।।

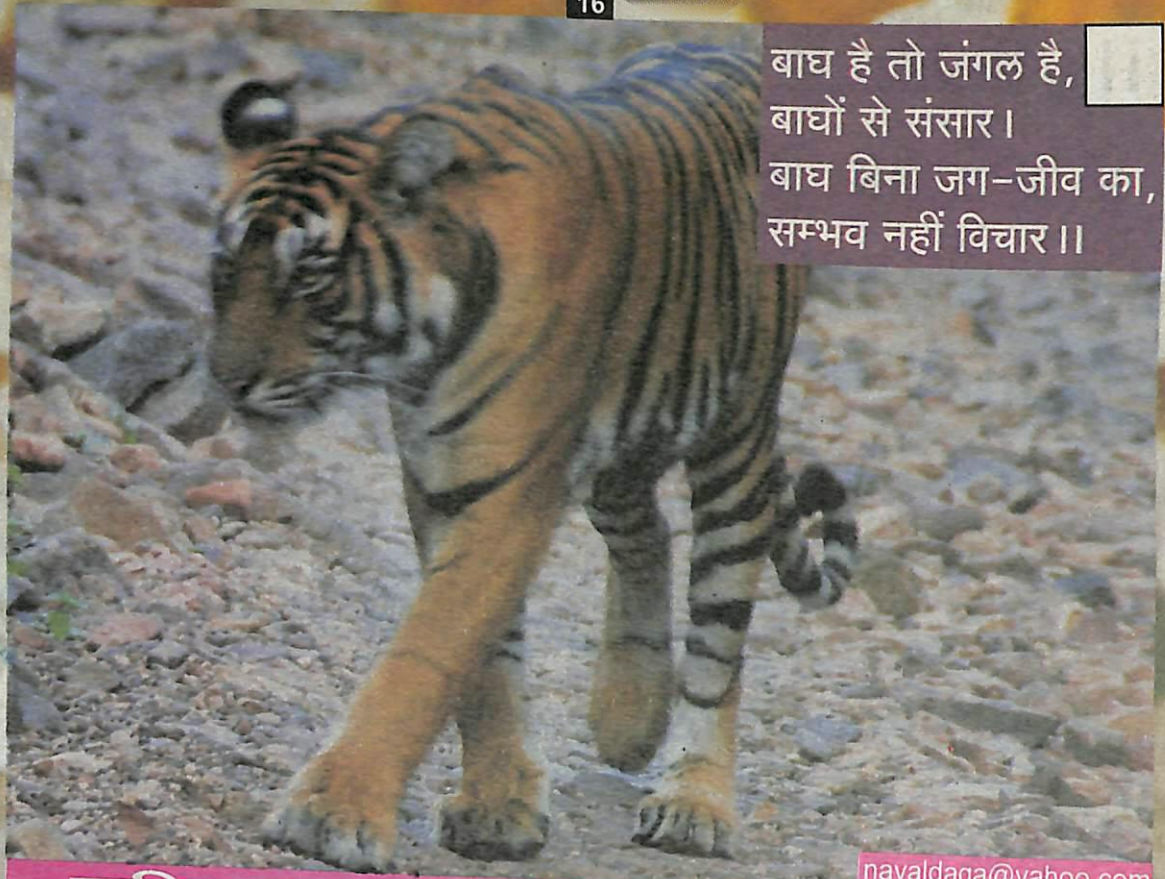

बाघ है तो जंगल है,
बाघों से संसार।
बाघ बिना जग-जीव का,
सम्भव नहीं विचार।।

navaldaga@yahoo.com

सरिस्का बाघ संरक्षण फाउण्डेशन

बाघ वंश हर हाल में, चेतनता की गंध।
तन–मन वर्धन रूप में, है जिसका अनुबंध।।

बाघ बिना संसार में,
मिले न सुख का मंत्र।
दुख के झाड़ों में फँसे,
मानव ..... यंत्र।।

बाघ-सुरक्षा के बिना,
कल क्या होगा यार।
ये ना ..... और से,
खुद ही करें विचार।।

बाघ बदल दे भाग्य की,
हो यदि बिगड़ी रेख।
बाघ ..... बंदगी,
मानव करके देख।।

बाघ बचाते जो नहीं,
बनते हरि ..... दास।
जग का करते नाश हैं,
अपना सत्यानाश।।

बाघ का संरक्षण कर, हो सबका उत्कर्ष। इस पूरे संसार में, फिर खुशियाँ अरु हर्ष।।

बाघ बचाएँ हे मनुज !,
ये ..... के मूल।
मानस में भर दिव्यता,
करते भव निःशूल।।

बाघ जहाँ बढ़ने लगे,
वहाँ शुद्ध ..... वायु।
मन खुश रहता है वहाँ,
जीवन बने चिरायु।।

बाघ की सुरक्षा करें,
सुखी ..... परिवार।
छाया कभी अकाल की,
करती नहीं प्रहार।।

बाघ–सुरक्षा से मिले,
प्रेम ..... अनुराग।
रक्षा अरु सम्भाल से,
मिले परम सौभाग्य।।

बाघ–सुरक्षा हो शुरू, घर–आँगन–चौपाल।
गाँव–नगर फैलाइए, घने वनों के जाल।।

बाघ बचाना अधिकतम, है जीवन का सार। इनसे ही अच्छा लगे, यह सारा संसार।।

बाघ हमारे देवता, करते जन-कल्याण। स्वार्थ हीन प्रतिदान के, ममतापूर्ण प्रमाण।।

बाघ मीत सम जानिए,
दें अन्तस का नेह।
तनिक प्रेम कर देखिए,
ये ममता के गेह।।

बाघ सम्पदा राष्ट्र की, बाघ ..... का दान। बाघ सुरक्षा धर्म है, बाघ जगत की जान।।	बाघ प्रकृति के मूल हैं, मानव ..... सार। बाघ नहीं तो समझ लें, जीना है दुश्वार।।
बाघ बचाते हम रहें, ये ..... के रूप। प्रजा पालने में कुशल, जगत् पिता सम भूप।।	बाघ वंश हर हाल में, चेतनता ..... गंध। तन-मन वर्धन रूप में, है जिसका अनुबंध।।

बाघ हमारी जान हैं, जीवन की मुस्कान। बाघ बिना जीवन नहीं, ये जीवों की जान।।

बाघ बचें तो हो सके, बंजर भू-शृंगार। आओ हम मिलकर करें, इसके लिए विचार।।

बाघ जहाँ रक्षित रहे, देश ..... आबाद। चहल-पहल हो बाघ से, जंगल जिन्दाबाद।।	बाघ अगर मौजूद हों, ... जंगल के द्वार। खुशहाली चहुँ ओर हो, सुखी रहे परिवार।।
बाघ की सुरक्षा करें, हिय में ..... बसाय। बरसे अमरत बादली, धरा सरस हो जाय।।	बाघ-सुरक्षा के लिए, ... हिन्दुस्तान। मिलजुल कर रक्षा करें, बनें नहीं अनजान।।

बाघ बचाते जो नहीं, बनते हरिं के दास। जग का करते नाश हैं, अपना सत्यानाश।।

बाघ–सुरक्षा के बिना, कल क्या होगा यार। ये ना पूछें और से, खुद ही करें विचार।।

बाघ सम्पदा राष्ट्र की, बाघ ईश का दान।
बाघ सुरक्षा धर्म है, बाघ जगत की जान।।

बाघ धरा पर ही सदा,
ईश्वर ..... वरदान।
मोल समझते बाघ का,
वे नर श्रेष्ठ महान्।।

बाघ धरा शोभा विमल,
बाघों ..... संसार।
बन जाती है स्वर्ग सम,
करें बाघ से प्यार।।

बाघ ईश की देन हैं,
मन ..... उपहार।
मत छीनें इनसे कभी,
जीने के अधिकार।।

बाघ सुरचना ईश की,
..... के शृंगार।
देते जीवन जगत् को,
अपने मन का प्यार।।

बाघ अगर मौजूद हों, हर जंगल के द्वार। खुशहाली चहुँ ओर हो, सुखी रहे परिवार।।

बाघ की सुरक्षा करें, सुखी रहे परिवार। छाया कभी अकाल की, करती नहीं प्रहार।।

बाघ देखकर श्रवण कर,
विस्मृत ..... पीर।
अपने-आप सराहते,
पा सुंदर तकदीर।।

बाघ देवता के विमुख,
जान-बूझ जो होय।
उन जैसे हत भाग नर,
नहीं ..... कोय।।

बाघ बचाने से मिले,
..... को विस्तार।
जो मानव राखें इन्हें,
मिलता उनको प्यार।।

बाघ-सुरक्षा से मिले,
सुख-साधन भरपूर।
सरल हृदय से हो यही,
सेवा ..... दस्तूर।।

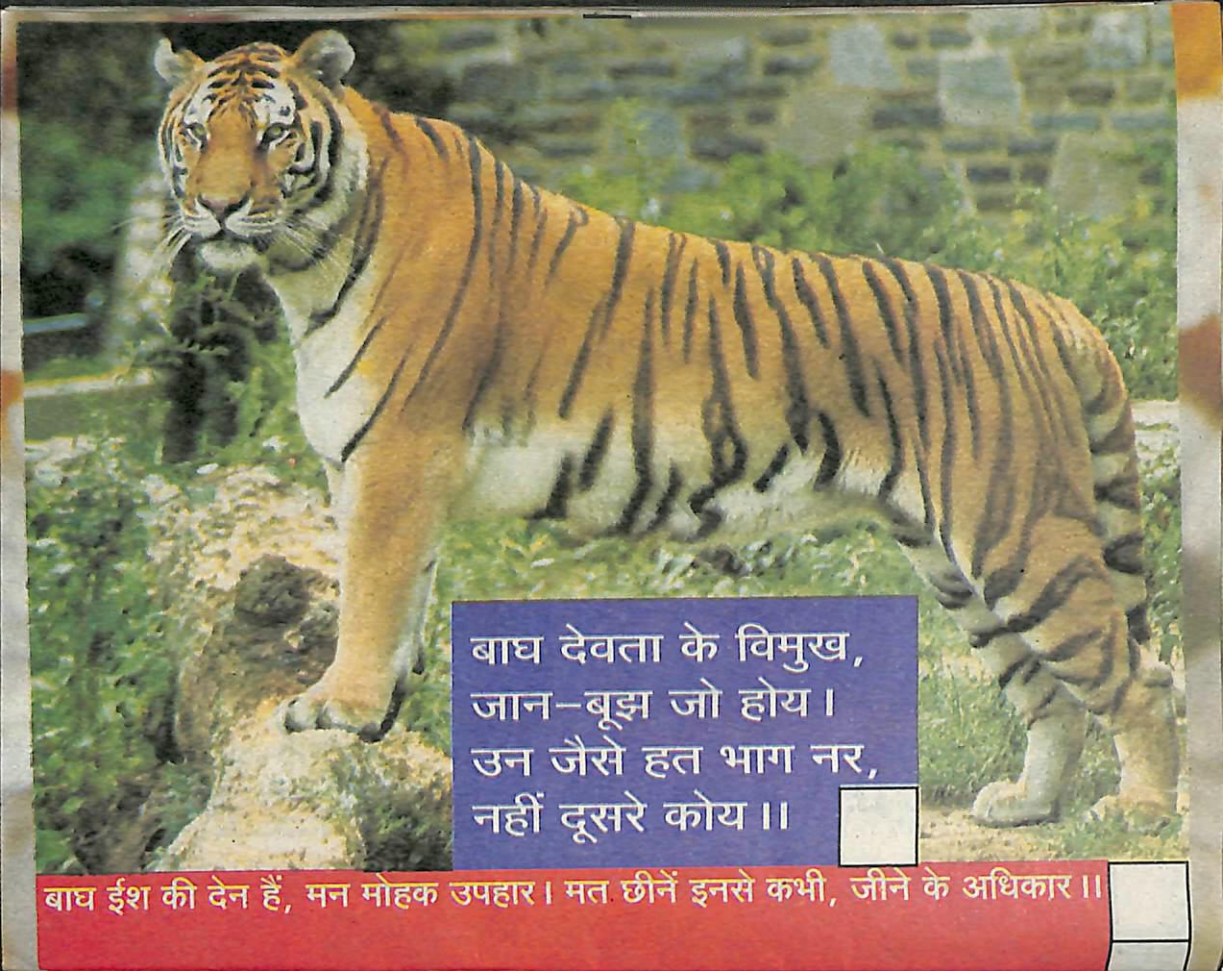

बाघ ईश की देन हैं, मन मोहक उपहार। मत छीनें इनसे कभी, जीने के अधिकार।।

बाघ धरा शोभा विमल, बाघों से संसार। बन जाती है स्वर्ग सम, करें बाघ से प्यार।।

बाघ देखकर श्रवण कर,
विस्मृत होती पीर।
अपने-आप सराहते,
पा सुंदर तकदीर।।

बाघ परियोजना संस्का

1. वन्य जीवों को खाद्य सामग्री नहीं डाले।
2. अभ्यारण्य क्षेत्र में संगीत नहीं बजाऐं।

बाघ की सेवा प्रथम कर्म, यह मानव का सच्चा धर्म।
बाघ सभी को लगते प्यारे, धरती पर हैं सबसे न्यारे।
बाघ धरा पर बढ़ते जाएँ, हम दिन-दूनी समृद्धि पाएँ।
बाघ हमें देते खुशहाली, इनकी करें नित्य रखवाली।
बाघ के अगणित हैं उपकार, जंगल के हैं ये रखवार।
बाघ से हम सब कर लें प्रीत, जीवन में भरेंगे संगीत।
बाघ का रखें हम सब ध्यान, तभी बनेगा देश महान्।
बाघ की जब करेंगे रक्षा, वन की होगी स्वतः सुरक्षा।
बाघ की करिए रोज सुरक्षा, सबको देवें ये ही शिक्षा।
बाघ सभी के सच्चे मीत, जन-जन गाए इनके गीत।
बाघ धरती पर बढ़ें अपार, इनसे बनें सुरभित संसार।
बाघ को जो दुःख पहुँचाते, पीढ़ी दर पीढ़ी दुख पाते।
बाघ से मिलते लाभ अपार, इनके बिना सूना संसार।
बाघ मनुज का सदा सहारा, रक्षा से ना करें किनारा।
बाघ बचाकर पुण्य कमाएँ, लोक और परलोक बनाएँ।

बाघ जहाँ बढ़ने लगे, वहाँ शुद्ध हो वायु। मन खुश रहता है वहाँ, जीवन बने चिरायु।।

बाघ तो हैं अकूत खज़ाना, मार इसे हरदम पछताना।
बाघ अब है अनमोल रतन, सुरक्षा का हमकरें जतन।
बाघ से हम सब प्यार करें, कभी ना इन पर वार करें।
बाघ भगाते मन की कुंठा, इससे उपजे नित उत्कंठा।
बाघ महिमा सदैव निराली, होती इनसे ही खुशहाली।
बाघ के हित में करें विचार, बाघ की माया अपरम्पार।
बाघ धरा के सुन्दर माली, ये करते वन की रखवाली।
बाघ की जो सुरक्षा करते, ईश्वर उनकी झोली भरते।
बाघ वनों की करते रक्षा, बाघ कवच है सबसे अच्छा।
बाघ बढ़े तो सुख पाएँगे, जन-जन को यह समझाएँगे।
बाघ सुरक्षा कर लें संभव, बने काज जो लगे असंभव।
बाघ हमें देते हरियाली, फिर जंगल क्यों इनसे खाली।
बाघ बचाकर पुण्य कमाएँ, वन को हम सब हरा बनाएँ।
बाघ रक्षा धर्म है अपना, सब मिल इसकी रक्षा करना।
बाघ का धरा से नित घटना, इससे बड़ी नहीं दुर्घटना।

बाघ की सुरक्षा करें, हिय में लेंय बसाय। बरसे अमरत बादली, धरा सरस हो जाय।।

2019

मुद्रित सामग्री
पुस्त-प्रेष्य

बाघ का जो करे तिरस्कार, उनको बारम्बार धिक्कार।

बाघ की सब करें हिफाजत, सबको हम दें ये हिदायत।

बाघ हमारा असली सोना, इसे भूलकर भी मत खोना।

प्रेषक,
सरिस्का बाघ संरक्षण फाउण्डेशन
बाघ परियोजना, (शासी निकाय)
सरिस्का-301 022
जिला-अलवर (राज.)

मूल्य @ ₹ 4/-
21-09-2012
Staple

लेखक, सम्पादक, प्रकाशक - नवल डागा, जयपुर-17
0141-2521221, 2521703, 09460142430
email : navaldaga@yahoo.com